पेट्रोल पर OMC को ₹1.5 का मार्जिन

रेगुलेटेड प्राइस सिस्टम में पेट्रोल और डीजल का मार्केटिंग मार्जिन 0.7 रुपये प्रति लीटर तय किया गया था। अब पेट्रोल का मार्जिन 1.5 रुपये और डीजल पर 1.1 रुपये प्रति लीटर का मार्जिन हो गया है

धवल जोशी, एमके ग्लोबल सिक्योरिटीज

डी-रेगुलेशन से बल्ले-बल्ले: ऑयल मार्केटिंग कंपनियों इंडियन ऑयल, BPCL और HPCL के प्रॉफिट मार्जिन में बढ़ोतरी हुई

[रामकृष्ण कास्लेलकर | मुंबई]

पेट्रोल और डीजल को सरकारी प्राइस कंट्रोल से बाहर किए जाने से तीन ऑयल मार्केटिंग कंपनियों - इंडियन ऑयल, BPCL और एचपीसीएल के प्रॉफिट मार्जिन में बढ़ोतरी हुई है। देश में पेट्रोलियम प्रॉडक्ट्स की जितनी खपत होती है उसमें 55 पर्सेंट हिस्सा इन दोनों प्रॉडक्ट्स का है, इसलिए हर लीटर पर एक रुपये एक्स्ट्रा चार्ज किए जाने से इंडस्ट्री को 10,000 करोड़ रुपये से ज्यादा प्रॉफिट होता है।

ये दोनों कंपनियां यह नहीं बताती हैं कि वे पेट्रोल और डीजल पर पक्का कितना मार्जिन कमा रही हैं। एक ऑयल मार्केटिंग कंपनी के हेड ने पहचान जाहिर नहीं किए जाने की शर्त पर कहा, 'हम पेट्रोल या डीजल जैसे प्रॉडक्ट्स पर अलग से मार्जिन की बात नहीं करते क्योंकि ये अब ल्यूब्रिकेंट्स और एविएशन की तरह डीरेगुलेट हो गए हैं।' उन्होंने यह जरूर माना कि मार्जिन में सुधार आया है। इसके चलते सेक्टर एनालिस्ट्स को सुधार का अनुमान लगाने के लिए खुद का कैलकुलेशन करना पड़ रहा है।

एमके ग्लोबल सिक्योरिटीज के रिसर्च एनालिस्ट धवल जोशी कहते हैं, 'रेगुलेटेड प्राइस सिस्टम में पेट्रोल और डीजल का मार्केटिंग मार्जिन 0.7 रुपये प्रति लीटर तय किया गया था। अब पेट्रोल का मार्जिन 1.5 रुपये और डीजल पर 1.1 रुपये प्रति लीटर का मार्जिन हो गया है। अगर रिटेल आउटलेट पर 2.5 से 3 करोड़ रुपये के इनवेस्टमेंट की जरूरत होती है तो मार्केटिंग मार्जिन इतना होना चाहिए कि उससे 15-16 पर्सेंट RoCE हासिल हो सके। हमारे हिसाब से रिटेल फ्यूल मार्केटिंग मार्जिन में बढ़ोतरी के चलते तीनों ओएमसी का नेट ब्लेंडेड मार्केटिंग मार्जिन 25.7 पर्सेंट सीएजीआर से बढ़ सकता है।'

BPCL पर 2 मार्च की सिटी की रिपोर्ट के मुताबिक ऑटो फ्यूल्स पर कंपनी का ग्रॉस मार्केटिंग मार्जिन दिसंबर 2014 क्वॉर्टर में बहुत हो ज्यादा 2.2/2.3 रुपये प्रति लीटर था जबकि हिस्टॉरिकल एवरेज मार्जिन 1.5 रुपये है। इसकी वजह क्रूड ऑयल की कीमत में आई तेज गिरावट और इनवेंटरी लॉस की भरपाई है। सिटी के मुताबिक मार्जिन थोड़ा कम है लेकिन यह 1.5 रुपये के पिछले लेवल से ज्यादा है।

इंडिया में पेट्रोल की खपत अप्रैल 2014 से फरवरी 2015 के बीच 11.2 पर्सेंट बढ़कर 1.74 करोड़ टन हो गई थी। इसी दौरान डीजल की खपत महज दो पर्सेंट चढ़कर 6.35 करोड़ टन हुई। इन डेटा के हिसाब से इन दोनों फ्यूल की खपत फिस्कल ईयर 2015 में 10,000 करोड़ लीटर हो सकती है और इसमें से 95 पर्सेंट हिस्सा तीनों ओएमसी का होगा। इसको देखते हुए अगर मार्केटिंग मार्जिन में एक रुपये की भी बढ़ोतरी होती है तो ओएमसी के ऑपरेटिंग प्रॉफिट में सालाना 10,000 करोड़ रुपये की बढ़ोतरी होगी।

दुनिया भर में फ्यूल का मार्केटिंग मार्जिन इंडिया के मुकाबले ज्यादा है भले ही वहां डीरेगुलेशन के चलते कॉम्पिटिशन ज्यादा है। एनालिस्ट्स का मानना है कि इंडिया में मार्जिन में सुधार आएगा। इंडलबाइन ने 9 मार्च की रिपोर्ट में लिखा था, 'हमें अपने एनालिसिस से लगता है कि लॉन्ग टर्म में इंडिया में मार्जिन अमेरिका के रेट के हिसाब से 1 रुपये और साउथ कोरिया के हिसाब से 1.90 रुपये प्रति लीटर तक बढ़ सकता है।'

Economic Times

10/4/15